Open Transparent PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

IIJIF Impact-8.712 ISSN-2454-6283 April-2024

विशेषांक–हिन्दी साहित्य में मानवीय संवेदना

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक–डॉ.सुनील जाधव, नांदेड

तकनीकी सम्पादक–अनिल जाधव, मुंबई

विशेषांक संपादक मण्डल

संपादक–प्रा.रावन मुल्ला, सातारा

सह–संपादक–डॉ.शिराज शेख, सातारा, श्री.हरी पोरे, सातारा

web:- www.shodhritu.com

Email - shodhrityu78@yahoo.com

WhatsApp 9405384672

IIJIF

GENERAL IMPACT FACTOR

iiJS

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

ISSN

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INTERNATIONAL CENTRE

Cosmos

THOMSON REUTERS

Academic Resource Index

ResearchBib

saji

INDEX COPERNICUS INTERNATIONAL

SCOPUS®

Impact Factor

doie

Digital Online Identifier Engine

Official Correspondence Address:- Dr. Sunil Jadhav, Infront of Hunaman Gad kaman, Maharana Pratap Housing Society, Nanded - 431605, Maharashtra.

Email - shodhrityu78@yahoo.com

WhatsApp 9405384672

ISSN 2454-6283

9 772454 628000

अनुक्रमणिका

संपादकीय.....6

1.संत रविदास के काव्य में मानवीय संवेदना 8

–प्रा.डॉ.पवार एस.एन......8

2.मध्यकालीन संतों के काव्य में मानवीय संवेदना.....10

–प्रा.विजय लोहार.....10

3.मालती जोशी कृत 'गुमशुदा की तलाश' कहानी में मानवीय संवेदना.....13

–डॉ.शेख मोहसीन शेख रशीद.....13

4.शिवमंगल सिंह सुमन की 'जागरण' कविता में समता मूलक समाज की मानवीय संवेदना 15

–डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव.....15

5.शरद सिंह के उपन्यासों में व्यक्त संवेदनशील नारी जीवन 17

–डॉ.चंद्रकांत यादवराव बंडेवार.....17

6.मन्नू भंडारी और निरूपमा बरगोहाइञ की आत्मकथाओं में चित्रित मानवीय संवेदना 20

–कसीरा जहां.....20

7.सुधाकर मिश्र की कविताओं में चित्रित मानवीय संवेदनाएँ.....22

–[1]विकास सुरेश शेटे, [2]डॉ.अशोक मोहन मस्के.....22

8.हिन्दी दलित कहानियों में चित्रित मानवीय संवेदना.....25

–नीतामणि बरदलै.....25

9.इन्सान को आखरी सासों तक बचाने की कोशिश 'और इन्सान मर गया' उपन्यास.....26

– डॉ.शहनाज मेहमुदशा सय्यद.....26

10.कृष्णा सोबती के उपन्यास दिलोदानिश में नारी के प्रति रहनेवाली क्षीण मानवीय संवेदना 28

–[1]नितुश्रीदास, [2] डॉ.नुरजहां रहमतुल्लाह.....28

11.कबीर के काव्य में मानवीय संवेदना.....31

–प्रा.हिरामण देवराम टोंगारे.....31

1.संत रविदास के काव्य में मानवीय संवेदना

–प्रा.डॉ.पवार एस.एन.
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदापूर

मध्यकालीन निर्गुणवादी संत साहित्य के मूल में उदात्त मानवतावादी विचारों के दर्शन होते हैं। इस मानवतावादी विचारों का प्रेरणा स्त्रोत मानवीय संवेदना है। जिसके परिप्रेक्ष्य में ही मानवतावाद का सही अध्ययन हो सकता है इसलिए मध्यकालीन निर्गुण वादी संत साहित्य में मानवीय संवेदना की उत्पत्ति, अर्थ एवं व्याप्ति का अध्ययन अनिवार्य है। मानवीय संवेदना यह एक ऐसा भाव है, जो मन में उमडकर आता है। उसकी उत्पत्ति मनुष्य के मन में तभी होती है जब मनुष्य, मनुष्य एवं अन्य किसी प्राणियों के प्रति सुख–दुख एवं पीडा की अनुभूति करता है। डॉ. सुनीता बानी के अनुसार संवेदना की उत्पत्ति किसी के दैन्य या दुख से होती है। जब हम किसी अच्छे व्यक्ति को दुख से ग्रसित देखते हैं, तो हमारे मन में उसके प्रति संवेदना का भाव जागता है। दुख का यह व्यापक क्षेत्र है। हर व्यक्ति के जीवन में सुख–दुख होते हैं। मनुष्य के जीवन में सुख की अपेक्षा दुख अधिक है। व्यक्ति अपने दुख को दूसरों में बांटना चाहता है। दुख में विशेष रूप से स्वभाव की अपेक्षा रहती है और यह स्वभाव हमें संवेदनशील व्यक्तियों से प्राप्त होता है। संवेदना का संबंध हमारी भावनाओं से होता है। यह मनुष्य की कोमल मनोवृत्ति है। यह व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ती है और वसुधैव कुटुंबकम की भावना को उत्प्रेरित करती है।[1] मानवीय संवेदना यह मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है। इस संवेदना से ही मनुष्य को अपनी मनुष्यता का एहसास होता है। यह एहसास समान सहानुभूति के रूप में मनुष्य के मन में वैश्विक धरातल पर प्रकट हो जाता है। धर्म, जाति, देश, प्रदेश इन सबसे परे मानवीय संवेदना का यह भाव जो मनुष्य एवं मनुष्येतर प्राणियों के लिए मनुष्य की आंखों में उत्पन्न होता है। इस भाव को मानवीय संवेदना कहते हैं। जो व्यक्ति संवेदनहीन है वह मनुष्य की संकल्पना में सम्मिलित नहीं होता है। सामान्य रूप से मानवीय संवेदना दुख को देखकर प्रकट होती है। मानवीय संवेदना का क्षेत्र बहुत व्यापक है। उसके इस व्यापकता से ही 'विश्वबंधुत्व' तथा 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना संभव है। मानवीय संवेदना की व्यापकता के कारण आपसी संबंधों की अतल गहराई संभव है। जब यह संवेदना मनुष्य के जीवन में प्रस्थापित होती है तब मानवता का जन्म, मानवता की उत्पत्ति हो जाती है। इसलिए मानवीय संवेदना को मानवता का स्रोत कहा जाता है। मानवीय संवेदना के अर्थ के बारे में हम सामान्य रूप से यह कहते हैं कि मनुष्य के मन में मनुष्य के लिए तथा मनुष्येतरप्राणियों के प्रति दया एवं सहानुभूति का भाव रखना। पर दुख से पीड़ित होना तथा पर दुख का एहसास हो कर मन में कचोट उत्पन्न होना ही मानवीय संवेदना की जागृति होना है।मानवीय संवेदना कीव्याप्ति समानता का भाव, प्रेम, एकता, आत्मीयता एवं अपनत्व का भाव इन तत्वों पर आधारित है।संत रविदास ने मानवीय संवेदना को व्यक्त करते हुए कहा है कि,रईदास मूडहि काटी करि, मुरख करत हलाल।/ गला काटहू अपना, तउका होई हि हाल।[2] जगदीश शरण के मत से "मूर्ख मनुष्य जीव का सिर काट कर उसे हलाल कर देता है। यदि वह इस तरह अपना गला कटवाए तो उसका ऐसा हाल होगा? रैदास ने इस साखी में जीवो के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त हो रही है।"[3]

डॉ.रमा शुक्ला के मतानुसार मानवीय संवेदना का अर्थ है, हृदय में एक ऐसे भाव का विकास अथवा हृदय जिसके अंतर्गत हम अपने जैसे अन्य प्राणी के दुख से दुखी होकर उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करें। मानवीय संवेदना की व्याप्ति एवं विकास उसी समय संभव है जब हम अपने स्वयं में समस्त सृष्टि को सम्मिलित करें। मानव एवं मानवेतरप्राणियों की आत्मा में अपनी आत्मा की उपस्थिति की कल्पना करें। उनके सुख–दुख एवं पीडा की अनुभूती जब हम करते हैं तब इस प्रकार का भाव होता है, जिसे हम मानवीय संवेदना कहते हैं। मानवीय संवेदना की व्याप्ति, समानता का भाव, प्रेम, एकता, आत्मीयता एवं तत्वों पर आधारित है जितना व्यापक है उतनी ही व्यापकता मानवीय संवेदना की है। जहां मनुष्य जाती का निवास है, वहां मानवीसंवेदना का वास है। जहा धर्म, जाति, कुल और धनकी शृंखला है।जो बात बात मनुष्य को मनुष्य के समीप नहीं आने देती और जहां मनुष्य–मनुष्य के बीच में भय, अविश्वास, कुटिलता और भेदभाव की दिवारे खडी हो जाती है, वहां मानवीय संवेदना का अभावात्मकता की अनुभूति जागृत होती है। डॉ.बैजनाथ सिंह के मत से मानवीय संवेदना की जितनी सहज परिव्याप्तीलोकजीवन मेंदेखने को मिलती है उतनी अन्यत्र संभव नहीं। मानवीय और मनुष्य के सूक्ष्मता संवेदानाश्रीत रिश्तो का ताना–बाणा हीमानवी जीवन है।सदियोंलंबी यात्रा तय करने पर भी आज के विघटीत मानवीय रिश्ते को धो रहे असंख्य महानगरीय अपार जन समूह में भी यदि कहीं कुछ उन्हे आपस में जुडे हुए हैं वह यही मानवीय संवेदना है। जो मानव को अनुवांशिक संस्कारों में प्राप्त हुई है। मानवीय संवेदना ही मनुष्यों को मम से आगे ममेतर से जोड़ती है। इस संवेदनासे मनुष्य जितना ऊपर या शून्य होता जाता है, उतने ही अंशोमें वह दूसरों से कटता चला जाता है।[4]

प्रेम भाव तथा समभाव समदृष्टि–संत रविदास निर्गुण कवि होने के कारण उनके काव्य में प्रेम तथा समदृष्टि परिलक्षित होती है। उनके समकालीन समाज की वह एक निरंतर आवश्यकता थी और इसी के कारण उनके काव्य की विशेषता प्रेम समदृष्टि रही है। रविदास के तत्कालीन समाज में मानवीय संबंधों का असंतुलन और अविघटित मानवीय संबंध, मनुष्य–मनुष्य में भेद, प्रेम, सुख और शांति का अभाव होने के कारण उनका काव्य प्रेमभाव तथा समदृष्टि कीसीख देता है। उनका सामाजिक ज्ञान और समाज के प्रति आस्था तथा लगाव की

भावना से उनको तत्कालीन समाज का स्पष्ट रूप से आकलन होता है। वे जानते थे कि "समाज में सुख शांति के लिए मानवीय संबंधों का सद्भावयुक्त और संतुलित होना आवश्यक है। जब मानवीय संबंध विघटित हो जाते हैं, तो सामाजिक अव्यवस्था उठती है। समाज में आपसीसंघर्ष एवं होड होती है। मनुष्य–मनुष्य में भेद का भाव सामाजिक एकता को खंडित करता है। मनुष्य के बीच प्रेम हैतो सुख और शांति मिलती है। प्रेम के अभाव में जीवन निस्सार हो जाता है।"[5] संत रविदास के व्यक्तित्व में निहित गुण– प्रेम, सद्भाव, सौहार्द, दया, परोपकार, सत्य उनके काव्य के उद्देश्य के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। तत्कालीन समाज वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था मे विभाजित हुआ था। उनका विरोध करते हुए रविदास अपने काव्य में सम दृष्टि का प्रदर्शन कर हमें यह उपदेश देते हैं कि जाति का प्रपंच शोषण के रूप में रचा गया है। समस्त मनुष्य मात्र एक समान है। समुचे विश्व धरातल पर मानव की एक जाती है और मानवतावाद ही एक धर्म है। वहां न कोई जाती है न कोई वर्ण है। जिस प्रकार केले का पेड़ अपने तने मे पत्तों की परतें समेट एक इकाई के रूप में अपना अस्तित्व प्रकट करता है वैसे मनुष्य भी है। यदि पत्तों की परतें एक एक हटा दी जाए तो पूरा पेड़ नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार सामाजिक विकास को यदि इकाई माने तो प्रत्येक व्यक्ति उस इकाई के अस्तित्व, उनके विकास से जुड़ा है। तथा कथित चार वर्ण एवं उनके जातियों में जन्मे सभी लोगों की जाति एक ही है और वो है– मनुष्य जाति। मनुष्य जाति को परस्पर में प्रेम और सद्भाव के सहारे अपना विकास करना चाहिए। यह मनुष्य जाति में संतुष्टि का भाव और प्रेम भावहीमनुष्य मात्रा के कल्याण का एकमेव मार्ग है। इसीलिए न कोई धर्म भेद नकोई जाति भेद मानवीय समाज में रखकर सब को एक समान मानते हुए वे अपने काव्य में कहते हैं, हिंदू तुरक मह नहीं कछु भेदा, दुई आयहू इक द्वार।/प्राण पीड लहूमांस एकइ, कहीं रैदास विचार।[6]

हिंदू मुस्लिम कट्टरपंथियों को समानता का उपदेश देते हुए वह अपने काव्य में कहते हैं–जब मनुष्य मात्र एक जाति है, जब जन्म की प्रक्रिया समान है, जब प्राण, पिंड, रक्त, मांस सब में एक ही प्रकार से मिलते हैं, तब यह हिंदू मुसलमान का झगडा कैसे? संत रविदास ने दोनों धर्मों के प्रति समान भाव रखते हुए सभी में मानवीयसंवेदना होने का उल्लेख किया है। उनकी वैज्ञानिक सोच यह थी कि हिंदू मुसलमानों का भेद बाहरी है, जो मानव निर्माण करता है मनुष्य मात्र होने के कारण सभी मनुष्य परस्पर समानता और प्रेम मार्ग की ओर अग्रसर होते हुए वह कहते हैं कि प्रेम को ही अनन्य साधना का आधार मानते हैं। उनके लिए प्रेम से बडी न कोई भक्ति है, न मंदिर और नमस्जिद। भक्ति के जूठेउपादान मंदिर, मस्जिद में विराजमान मौलवी, पुरोहित और मौलवीभक्ति कोअपवित्र कर देते हैं।"[7] किंतु प्रेम सामाजिक स्तर पर मनुष्य मात्रा को पवित्रता से जोड़ देता है। प्रेम मनुष्य को अनन्य साधना का यात्री बना देता है। धार्मिक अंधविश्वासों की शृंखलापर प्रेम और समदृष्टि मर्यादा का अंकुश लगा देती है। जिससे मानवीय संवेदनाओ का विकास और सामाजिक जिम्मेदारियों का बोध हो जाता है।

वैश्विक धरातल पर मानवता को धर्म का स्थान देकर संत रविदास प्रेमभाव को आवश्यक तत्व मानते हैं। उनके अनुसार प्रेम जगत का व्यापार है, प्रेम हृदय से होता है। अतःमस्तिष्क से उसका कोई संबंध नहीं है।हृदय जगत के इस उदात्त व्यापार में तर्क, वितर्क, जोर, दबाव नहीं होता है। प्रेम का लक्ष्य प्रेम ही हैऔर कुछ नहीं। प्रेम जगत में समदृष्टीअहम होती है; क्योंकि वहां न कोईनिम्न, न कोई धनी, न कोई निर्धन, न कोई शूद्र, न कोई महान होता है। वहां सभी एक समान होते हैं। मनुष्य मात्र में मानवता का भाव जागरूक करने के लिए प्रेमभाव सर्वश्रेष्ठ और आवश्यक है।इस संदर्भ में संत रविदास की पंक्तियां है–मुसलमान सो दोसती, हिंदु अन सोकर प्रीत।/रविदास ज्योति सभ राम की, सभ है अपने मीत।।[8] जहां हिंदू मुसलमान धर्म भेद अपनी चरम सीमा पर था, लोग एक दूसरे के जान के प्यासे हुए थे, वहां संत रविदास का इस तरह का प्रेम तथा मानवीयता का उपदेश कट्टरपंथियों की आंखे खोल देता था। हिंदुओं के साथ प्रेम, मुसलमानों के साथ मित्रता, करने का उपदेश रविदास देते थे; क्योंकि वे जानते थे कि हिंदूऔरमुसलमानों में आत्मा रूपी राम एक ही है। सभी एक दूसरे के अपने हैं, यहा दूसरा कोई नहीं है। आपस में प्रेम भाव को नष्ट कर सामाजिक विकास नहीं हो सकता है। वर्ण व्यवस्था के अनुसार तत्कालीन समाज को चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र में विभाजित किया गया था और आपस में हीन भावना को उजागर कर मानवता को खत्म किया। वहां संत रविदास अपने काव्य में वर्ण व्यवस्था का खंडन करते हुए मानवता को उजागर करते हुए कहते हैं–रविदास जात मत पूछहु, का जात का पात।[9] इसी वर्णभेद भाव का तिरस्कार कर ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र इन चातुर्वर्णोको एकसमान मानते है, इनका कोई धर्म नहीं है, न कोई उच्च है न कोई निम्न, सबकी एक ही जाति है, वह है मनुष्य मात्र। कर्म पर आधारित बनाई हुई जाति व्यवस्था तत्कालीन समाज को अस्थिर बनाकर मनुष्य के मनुष्यत्व को खत्म करती है।

अहिंसा का भाव –अहिंसा का अर्थ है किसी को क्षति न पहुँचाना।वे अहिंसा के भाव मे मनुष्य एवं प्राणी मात्र के प्रति प्रेम तथा अपनत्वकी भावनाओं को सम्मिलित करतेहै। अहिंसा यहसबसे बडी शक्तिहै। इसशक्ति के आधार पर मानवीय तथा मानवीय संवेदनाओ को उजागर किया जा सकता है। संत रविदास के काव्य में जैन तथा बौध धर्म मे उत्पन्न हुआ अहिंसा का भाव दिखाई देता है। उनके काव्य से यह मालूम होता है कि समस्त प्राणी मात्रा के लिये वे अहिंसा के बारेमें अपने मत का प्रकटीकरण प्राणी हत्या को देखकर इसप्रकार करते है–रैदास जीव मत मारहि, इक साहिब सभ माहि।/सभी महि एकऊ आत्मा, दुसरह कोउ नाही।।[10]

दया और परोपकार–रविदास के काव्य का मूल भाव दया और परोपकार है। दया और परोपकार यह उदात्त मानवीय भाव है।आचार्य रामचंद्र शुक्ला ने दया और परोपकार की व्याख्या करते हुए लिखा है कि, "दुसरो के दुख के परीज्ञान से जो दुख होता है वह दया और परोपकार के नामों से पुकारा जाता है और अपने दुख को दूर करने की उत्तेजना करता है।"[11] इनके काव्य में व्यक्तियों के हृदय मेंदया और परोपकार का भाव इस प्रकार स्पष्ट होता है–दया धर्म जिन्ह नही, हिरदेपाप को कीच।/ रविदास तिनही जनीहो, महा पातकी नीच।।[12] इन्होने अपने काव्य मे दया भाव और परोपकार की भावना का महत्व स्पष्ट कर मानवीय संवेदना को उजागर किया है। संत रविदास का काव्य मानवीय संवेदना पर आधारित हैं। उनकी समकालीन समाज व्यवस्था जिस नैतिकता पर आधारित थी। उससे आम आदमी की बढ़ती मानसिक अस्वस्थता, समानता का अभाव, उन पर होने वाला अन्याय, अत्याचार, मानवता का पतन, रविदास ने स्वयं की आंखों से देखा था। इन सभी पर रविदास का गहरा चिंतन मानवीय गरिमा को बढ़ावा देता है। इनके काव्य में मानवी एकता, मानवी मूल्य एवं संस्कार, समदृष्टि एवं मानवीय संवेदना, मानवी विकास मे श्रम का दायित्व आदि मानवीय परिवर्तन के पहलू विद्यमान है। यह विचार किसी भी युग में परिवर्तन लाने मे सक्षम है। उनका काव्य किसी भी समूह, वर्ग, जाति, देशके संकीर्ण दृष्टीकोन को स्वीकार नहीं करता है, बल्कि समस्त मानव का उत्थान और विश्व कल्याण करने के लिये मानवीय संवेदनाओ से सराबोर है। उनके काव्य में मुखरित मानवीय संवेदना का भाव समस्त मानव को वैश्विक धरातल पर मानव धर्म प्रस्थापित करने के लिये जागृत करता है।

संदर्भ – (1)रांघेय राघवके उपन्यासो मेंमानवी मूल्य,डॉ. सुनिता बाणी,पृष्ठ क्र.120 (2)रैदास ग्रंथावली, डॉ. जगदीश शरण, साखी 216 (3)वही–पृ.क्र.124 (4)गुरु साविदास साहित्यिक मुल्यांकन, डॉ. धर्मपाल, डॉ.बजदेव सिंह बद्दल, पृ.क्र.137 (5)रांघेय राघव के उपान्यासो मे मानवी मूल्य,डॉ. सुनिता बाणी पृष्ठ क्र.119 (6)गुरु रविदास दर्शन एव मीरा पदावली, निशान साहिब, पृ.क्र.109 (7)संत कवि रैदास, भगवती प्रसाद निदरिया पृ.क्र.50 (8)रविदास दर्शन, दोहा 147 (9)वही, दोहा 148 (10)गुरु रविदास दर्शन एव मीरा पदावली, निशान साहिब, पृ.क्र.113 (11)चिंतामणी भाग एक, रामचंद्र शुक्ल, पृ.क्र.36 (12)आचार्य पृथ्वीसिंह आझाद, रविदास दर्शन दोहा 131

2.मध्यकालीन संतों के काव्य में मानवीय संवेदना

–प्रा.विजय लोहार
सहायक प्राध्यापक,
मूलजी जेठा महाविद्यालय, जलगांव

समाज का लक्ष्य निरंतर प्रगति और विधायकता की ओर उन्मुख होता है। बहुत बार इस लक्ष्य की आपूर्ति संभव नहीं हो पाती जिसके कारण किसी राष्ट्र का समाज अवनति की कगार पर आ जाता है। उसे प्रगति की सही राह पर कोई महात्मा या समाज चिन्तक ही ला सकता है। कोई भी महात्मा, कवि –साहित्यकार या समाज चिन्तक अपने समय की परिस्थितियों की देन होता है। वर्तमान समय के सवालों के आलोडन–विलोडन में उसका व्यक्तित्व–कृतित्व तैयार होता है। उसके जीवनमूल्यों की अभिव्यक्ति में समाज का जीवन सुजलाम–सुफलाम हो जाता है। मध्यकाल के हिंदी संत साहित्य में समाजोपयोग और मनुष्योपयोगी जीवन मूल्यों की स्थापना भरसक प्रयास उजागर होते हैं। उनके उस समय के वह सार्थक प्रयास आज के भूमंडलीय उथल–पुथल के समय में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक माने जाते हैं। मानव के सामाजिक संबधों को गतिशील और अधिक बेहतर बनाने के लिए उनमें नैतिक मूल्यों का पनपना अत्यधिक जरुरी है। हिंदी के मध्यकालीन संत साहित्य में मानव को मानव बनाये रखने के लिए नैतिक मूल्यों को उभारा गया है। मानवीय संवेदना के अनेक उदात्त चित्र संत साहित्य में परिलक्षित होते हैं। यह सत्य है कि सभी संत मानवतावादी थे। उनकी मानवीय संबध्दता सर्वविदित है। उन्होंने हर जीव को समान दृष्टि से देखा।

संत काव्य का मानवीय संवेदना का फलक काफी निर्मल और व्यापक है। संतों के लिए 'सर्वे भवन्ति सुखिनः' या 'भवतु सब्ब मंगलम' की भावना उनकी प्रेरणा रही। उनकी रचनाओं में अहंकार का त्याग, विषय–वासना का त्याग, कथनी और करनी में एकता, अहिंसा, परोपकार, वाणी की मधुरता, दया–भाव, असंग्रह, भूत–दया, सत्यशीलता, आचरण की शुचिता पर अधिक बल दिया हैं, जो मानवीय जीवन को समृद्ध और गतिशील बनाती है। मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में मध्यकालीन हिंदी संत साहित्य की अपनी अलग पहचान रही है। उनकी इस मूल्य चेतना में विश्व बंधुत्व तथा सामाजिक समरसता का भाव विद्यमान है। आधुनिक सन्दर्भों में यह तत्व और अधिक आवश्यक माने जाने लगे हैं। उन्होंने सामाजिक यथार्थ के साथ–साथ नैतिक आचरण को भी महत्त्व प्रदान किया है। मानव–जीवन का मूल्य–बोध उनकी रचनाओं में जगह– जगह पर प्राप्त होता है। मानवीय मूल्य उनके काव्य की आधारशीला है। नैतिक मूल्यों का अंतर्भाव भी मानवीय मूल्यों में होता है। अतः नैतिक मूल्यों के प्रति संत काफी सजग रहें। उनकी रचनाओं का अनुशीलन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि, वे मानवमात्र को हर संकुचित भावना से ऊपर उठाना चाहते थे। उनकी नज़र में